प्रथम आभास

रात्रि का था आरम्भ हुआ
चांदनी की छिटकने लगी प्रभा
तभी वहीं खेलते-खेलते अचानक
सारी चंचलता समेट कर बालक
कुछ खोजने लगा बादलों में
क्या छिपा था नभ-आँचल में?
काली चुनरिया थी गई सरक
सुन्दर चेहरा था हुआ प्रकट
पर यह तो फिर हो गया विलोम
फिर एक झलक दिखी तो
खुशी से नाच उठा रोम-रोम
इस लुक छिप को देखा बहुत देर
हैरान था देखो वह बालक
क्या नभ में भी होता है खेल?
माँ का कहना खाना खा लो
यूँ लगा नहीं तो थप्पड़ लो
मुझे भला कोई रोके क्यूँ
इस प्रिय कार्य में टोके क्यूँ
यह बाधा उसे यूँ भाई नहीं
पर डाँट भी तो सुखदायी नहीं
वह लौटा शीघ्र बिस्तर पर पड़ा
रहा घूरता गगन मंडल को
कितना बड़ा है ब्रह्मांड सकल
क्या देख सकूँगा कभी इसको?
यह क्षितिज मुझे है भाया अति
पर पहुँचे उस तक कैसे कोई
सामने था असीम अपार देश
पर आँखें थीं सोई-सोई।

.....

श्वासों की लहर
उठना जाना
जीवन और मौत के बीच संपर्क
दूरी है भी और नहीं भी
परेशानी नहीं राहत भी नहीं
मैं और मेरा अस्तित्व
है भी और नहीं भी।